INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 7, July 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

कॉकबरक साहित्य के विकास में उपन्यास की भूमिका विशेष 'तोंगथाई नाईतुगुई' के संदर्भ में

मोलिना देबबर्मा
(शोधार्थी)
त्रिपुरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग

प्रस्तावना:

त्रिपुरा एक ऐसा राज्य है जिसमें विभिन्न समुदाय के लोग युगों से निवास करते आएँ हैं। त्रिपुरा पूर्वोत्तर राज्यों में से एक छोटा राज्य है। जिसको भारत के द्वितीय छोटा राज्य माना जाता है। जिसका अपनी समृद्ध परंपरा, इतिहास आदि है। त्रिपुरा अपनी प्राकृतिक सुंदरता, पहाड़ियों और जंगलों के लिए जाना जाता है। त्रिपुरा प्रदेश की अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर है। त्रिपुरा के जनजातीय समाज के संस्कृति, साहित्य और परंपरा अत्यंत समृद्धि है। इस राज्य की प्रमुख जनजातियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा कॉकबरक है। यह भाषा त्रिपुरी जनजातियों के लिए अस्मिता और पहचान का भी प्रतीक माना जाता है। कॉकबरक साहित्य का विकास विशेष रूप से 70-80 के दशक में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देखा जा सकता है। जिनमें कविताएं, छोटी कहानियाँ, नाटक और उपन्यास आदि है। उपन्यास साहित्यिक कृति के रूप में मानवीय अनुभवों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। जिसमें काल्पनिक कथा है। कल्पना जो कथानक, पात्रों, परिवेशों के माध्यम से जन साधारण के अनुभवों, राजनीति, सामाजिक आदि मुद्दों को यथार्थ के साथ दर्शाती हैं। कॉकबरक उपन्यासों में भी साधारण मानव के जीवन कथा को व्यक्त किया गया है और उपन्यास की विषय वस्तुओं में समाज, संस्कृति, राजनीति, पर्यावरण और इतिहास की स्पष्ट झलक को दिखाया गया है। जिस कारण कॉकबरक उपन्यासे अपने को समकालीन भारतीय उपन्यासों की मुख्य धारा में सम्मिलित करती दिखाई पड़ती हैं।

कॉकबरक साहित्य के विकास में उपन्यास की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। 'तोंगथाई नाईतुगुई' अर्थात 'आश्रय का तलाश में' उपन्यास कॉकबरक भाषा में लिखा गया एक बहु चर्चित उपन्यास है। जिसे श्यामलाल देबबर्मा ने लिखा और जिसका प्रकाशन सन् 2007 में हुआ था। जिसमें त्रिपुरी समाज की सामाजिक समस्याएँ, सांस्कृतिक मान्यताऐं, परंपरा, संघर्ष, शिक्षा का अभाव, और राजनीतिक चेतना जैसे मुद्दों को उपन्यासकार ने सच्चाई के साथ व्यक्त किया है। उपन्यास को सर्वप्रथम जनवरी सन् 1987 से लेकर दिसम्बर सन् 1992 तक गनमुक्ति परिषद् द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'लामा' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित किया गया था। उपन्यासकार ने इस उपन्यास में जनजातीय समाज के विचारों, बिखरी हुई घटनाओं और समस्याओं को एक साथ लाकर समाज के समुख प्रस्तुत किया है। अपने अधिकारों के लिए संग्राम और आन्दोलन करने को कहता है। दिशाहीन युवा वर्ग हताश, निराश, होकर उग्रवादी बनकर आन्दोलन करने की बात कहते है। उपन्यास में प्रस्तुत विषय-वस्तु आज भी देबबर्मा समाज में प्रासंगिक है। श्यामलाल ने उपन्यास में अपने समाज के यथार्थ को दर्शाया है और सामाजिक,

राजनीती,संस्कृति विषयों पर प्रकाश डालते है। उपन्यास में मुख्य रूप से शोषण और संघर्ष को दर्शाया है। उपन्यास में समाज में फेहल रही सांप्रदायिक विचारधाराओं का विरोध किया है। उपन्यासकार ने उपन्यास में गाँव के वास्तविकता को दिखाया है और वर्तमान समय में लोगों के बदलते हुए मानसिक कुंठाओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया है ताकि जनता वास्तविकता से परिचित हो सके।

कॉकबरक साहित्य में उपन्यास विकास:

कॉकबरक भाषा में उपन्यास का विकास यात्रा मुख्य रूप से 1970 से 1980 के दशक के बीच हुआ था। इस कालखंड में कॉकबरक उपन्यास के विकास यात्रा में कॉकबरक भाषा के पहला पत्रिका 'कुताल कोथोमा' के संपादक सुधन्वा देबबर्मा के प्रयासों को विशेष रूप से उल्लेखनीय माना गया है। कॉकबरक उपन्यास के विकास की नींव रखने में उनका योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कॉकबरक भाषा का पहला उपन्यास 'हाचुक खुरिवो' सुधन्वा देबबर्मा द्वारा लिखा गया उपन्यास है, जिसका प्रकाशन सन् 1987 में हुआ था। यह उपन्यास चार खंडों में विभाजित है । प्रारंभिक तीन खंड को सन् 1987 में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया था । चतुर्थ खंड त्रिपुरा सरकार के 'संस्कृति एवं पर्यटन विभाग' द्वारा संपादित 'रायमा पत्रिका' में प्रकाशित हुआ।' इस उपन्यास के चारों खंडों का अनुवाद 2004 में बांग्ला भाषा में किया गया, जिसे अक्षर पब्लिकेशन, अगरतला द्वारा प्रकाशित किया गया था। बाद में वर्ष 2023 में प्रोफेसर मिलन रानी जमातिया और चंद्रकला पांडे ने इस उपन्यास का हिंदी में अनुवाद किया। उनके इस प्रयास ने त्रिपुरी समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को उजागर किया है। इतना ही नहीँ, इस उपन्यास के माध्यम से पाठकों को न केवल त्रिपुरा की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत को जानने का अवसर मिला, बल्कि त्रिपुरी समाज में हो रहे विभिन्न सामाजिक बदलावों, संघर्षों और अंतर्विरोधों को भी समझने का एक सशक्त माध्यम प्राप्त हुआ है। उपन्यास कि कहानी मुख्य रूप से एक युवा आदिवासी युवक के जीवन संघर्ष, प्रेम, और सामाजिक परिवर्तनों के इर्द-गिर्द घूमती है।

इस प्रकार यह माना गया कि कॉकबरक भाषा का प्रथम उपन्यास सुधन्वा देबबर्मा कृत 'हाचुक खुरिवो' (पहाड़ की गोद में) है। कॉकबरक भाषा में ऐसे कई उपन्यास प्रकाशित हुआ है जो निम्नलिखित रूप में है:

i.हाचुक खुरिवो (1987) सुधन्वा देबबर्मा
ii.खोंग (1996) श्यामलाल देबबर्मा
iii.मुनाकनी पोहोर (2001) कुंजु बिहारी देबबर्मा
iv.रुंग (2001) नन्द कुमार देबबर्मा
v.लाँगमानी रुकुनगो (2003) सुनील देबबर्मा
vi.1980(2005) अतुल देबबर्मा
vii.तोङथाई नाईतुगुई (2007)- श्यामलाल देबबर्मा
viii.दोलाई तूईमा नारों (2008) बिजॉय देबबर्मा
ix.लोखोपोती (2010) शेफाली देबबर्मा
x.खोराङ्ग बुकचा खालुङ (2015) शेफाली देबबर्मा आदि उपन्यास है।

कॉकबरक भाषा के इन उपन्यासों में जनजातीय समाज की जीवनशैली, परंपराएँ, रीति-रिवाज, लोककथाएँ तथा समकालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण प्रमुख रूप से किया गया है। इन उपन्यासों में आदिवासी समुदाय के संघर्ष, उनकी अस्मिता, आधुनिकता के प्रभाव और सांस्कृतिक बदलावों को भी चित्रित किया गया है। इन उपन्यासों ने कॉकबरक भाषा को साहित्यिक मंच पर सशक्त बनाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाया साथ ही जनजातीय समाज के विविध पक्षों को प्रकट कर समकालीन साहित्य को भी समृद्ध किया और नई पीढ़ी के लेखकों को भी प्रोत्साहित किया। कॉकबरक उपन्यास केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक चेतना के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन उपन्यासों के माध्यम से कॉकबरक भाषा और संस्कृति को नई पहचान मिली है।

तोङथाई नाईतुगुई उपन्यास का परिचय:

तोङथाई नाईतुगुई उपन्यास सन् 2007 में कॉकबरक भाषा में लिखित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसे श्यामलाल देबबर्मा ने लिखा है। यह उपन्यास त्रिपुरी समाज के आदिवासी समुदाय की सांस्कृतिक, सामाजिक, परंपराओं के साथ-साथ विभिन्न पक्षों को उजागर करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उपन्यास में चित्रित विभिन्न तत्वों का विश्लेषण रहा है, साथ ही तिपरासा समाज में व्याप्त पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जैसे आदि समस्याओं की विवेचना करना है ।'तोङथाई नाईतुगुई' उपन्यास की कथा वस्तु सिपाहिजला जिले में स्थित बिशालगढ़ के रोंगमाला नामक गाँव के आस-पास की कहानी को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है। उपन्यास की कथा वस्तु त्रिपुरी समाज के ऐसा बालक का जीवन से जुड़ा हुआ है जिसकी माँ का देहान्त उसका बचपन में ही हो जाता है। यह उपन्यास बालक वाखीराय को आधार बनाकर लिखा गया है। जो अपने जीवन तथा उद्देश्य के पहचान की खोज में भटकता रहता है। उपन्यास में त्रिपुरी समाज के जीवन, उनके संघर्ष तथा आधुनिकता के प्रभावों को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र वाखीराय है। जिसके आंतरिक और बाह्य संघर्षों को इस उपन्यास में दर्शाया गया है। इस उपन्यास में त्रिपुरी समाज की सांस्कृतिक धरोहर और उनके अस्तित्व की चुनौतियों को प्रस्तुत किया गया है।

इस उपन्यास में लेखक ने समाज की नई अभिव्यक्ति को स्थान दिया है। त्रिपुरी समाज के वर्तमान विसंगतियों, विद्रूपताओं का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास में मानवीय मूल्यों का हनन, मोहभंग, हताश, ग्रामीण संस्कृति और बदलते मानवीय मूल्यों जैसे विषयों को उपन्यास में व्यक्त किया है। इस उपन्यास का मुख्य चरित्र एक बालक है जो अपने मातृत्व की ममता के लिए तरसकर रह जाता है। अपने जीवन को सुचारु रूप से चलाएं रखने के लिए किस प्रकार शुरू से अंत तक संघर्षों से जीवन व्यतीत करता है उसी का यथार्थ वर्णन है। जहाँ कदम-कदम पर नई चुनौतियों का सामना करता हुआ आगे बढ़ता जाता है। किस प्रकार एक बालक स्वयं से आत्मा निर्भर बन जाता है और धीरे-धीरे समाज में अपना पहचान बनाने में सक्षम हो जाता है। उपन्यासकार ने ऐसे ही यथार्थ घटनाओं को सच्चाई के साथ उपन्यास में व्यक्त किया है। यह उपन्यास एक ऐसे समय और समाज की व्यवस्था की कथा है, जहाँ त्रिपुरी समुदाय अपने अस्तित्व, पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है। यह केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभवों और घटनाओं की गाथा है। जिसमें भूमि से बेदखली, संस्कृति

का संरक्षण, रोज़गार की कठिनाइयाँ, और राजनीतिक जागरूकता का उदय प्रमुख रूप से दिखाई देता है। 'तोङथाई नाईतुगुई' उपन्यास में उपन्यासकार केवल भौतिक तत्वों की बात नहीं करता बल्कि त्रिपुरी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और आत्मिक सुरक्षा की तलाश है। उपन्यास के कई पात्र अतीत के अनुभवों और वर्तमान के संघर्षों के माध्यम से यह समझाने की कोशिश करते हैं कि वे कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं? इस प्रकार उपन्यास की कथा वस्तु में एक व्यक्ति के कहानियों को समेटे हुए लेखक ने अपने समाज के सामूहिक पहचान की तलाश की बात कहते है। यह उपन्यास कॉकबरक गद्य साहित्य को नया आयाम देता है, क्योंकि इसमें आधुनिक उपन्यास की सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं जैसे चरित्र-चित्रण की गहराई, कथानक का यथार्थवादी विकास, संवाद की स्वाभाविकता और समाज के व्यापक सरोकार।

साहित्य के विकास में तोङथाई नाईतुगुई का योगदान :

1. गद्य साहित्य को सशक्त आधार प्रदान करना

कॉकबरक साहित्य में कविता और लोकगीत की परंपरा बहुत पुरानी रही है, परंतु गद्य साहित्य विशेषकर उपन्यास के क्षेत्र में कमी थी। तोङथाई नाईतुगुई ने कॉकबरक साहित्य में उपन्यास विधा को मज़बूत आधार दिया और आगे के लेखकों को प्रेरणा दी।

2. जनजातीय जीवन का यथार्थवादी चित्रण

इस उपन्यास में त्रिपुरा के आदिवासी समाज का जीवन, संस्कृति, रीति-रिवाज और संघर्ष को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया गया। यह कॉकबरक समाज की अस्मिता (identity) और सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने का माध्यम बना।

3. सामाजिक सरोकारों का उद्घाटन

उपन्यास ने सामाजिक असमानता, गरीबी, परंपरा और आधुनिकता के टकराव, तथा जनजातीय समाज की समस्याओं को उजागर किया। इसने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न बनाकर समाज सुधार का उपकरण भी बनाया।

4. भाषिक समृद्धि

उपन्यास ने कॉकबरक भाषा को एक नया अभिव्यंजना-पथ दिया। शब्द-चयन, संवाद शैली और कथानक की प्रवाहपूर्ण भाषा ने कॉकबरक गद्य को अधिक परिष्कृत व प्रभावी बनाया।

5. सांस्कृतिक चेतना और अस्मिता का संरक्षण

तोङथाई नाईतुगुई त्रिपुरी समाज की सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर आधुनिक संदर्भों को सामने लाता है। यह उपन्यास पाठकों में अपनी मातृभाषा और संस्कृति के प्रति गौरव-बोध पैदा करता है।

इस प्रकार 'तोङथाई नाईतुगुई' उपन्यास एक साहित्यिक रचना न होकर त्रिपुरा की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परतों को उजागर करने वाला एक प्रामाणिक दस्तावेज़ बन जाता है।

श्यामलाल ने इस उपन्यास के माध्यम से न केवल त्रिपुरी समाज की जटिलताओं को सामने रखा है, बल्कि उसमें व्याप्त संघर्ष, असंतोष और पहचान की खोज को भी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। यह उपन्यास पाठकों को सोचने पर विवश करता है कि किस प्रकार सामाजिक असमानता, राजनीतिक शोषण और सांस्कृतिक संकट एक पूरे समुदाय के अस्तित्व को चुनौती दे सकते हैं। उपन्यास का केंद्रीय संदेश यह है कि कठिनाइयों और अव्यवस्थाओं के बीच भी यदि व्यक्ति और समाज अपने आत्म का विश्लेषण करें और संघर्ष का मार्ग अपनाएं तो परिवर्तन संभव है। श्यामलाल आधुनिक कॉकबरक उपन्यास में समकालीन मानव जीवन की जटिलताओं को यथार्थ के साथ प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने उपन्यास में मनोवेज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए तिपरासा जनजातीय और जनसाधारण के आन्तरिक संघर्षो को प्रस्तुत किया है। श्यामलाल के उपन्यास में प्रतुत कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल, उद्देश्य, भाषा शैली की सफल प्रतिस्था हुई है। इन सभी तत्वों के समायोजन से उपन्यास में जीवंतता और सजीवता बढ़ गई है। 'तोङथाई नाईतुगुई' उपन्यास में त्रिपुरी समाज के लोक जीवन का यथार्थ रूप से चित्रण किया गया है। इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता यह है कि इसकी विषय-वस्तु सीधे आम जनजीवन से जुड़ी हुई है। उपन्यासकार ने जिस जीवन को स्वयं अनुभव किया है, उसी को प्रामाणिकता और संवेदनशीलता के साथ इस उपन्यास में चित्रित किया है। उन्होंने त्रिपुरी समाज की उन समस्याओं को उठाया है जिन्हें उन्होंने करीब से देखा और महसूस किया है। वाखीराय जैसे पात्रों की अपने ही लोगों से मिलने वाली उपेक्षा और धोखे की पीड़ा जहां पाठक को दुःखी करती है, वहीं मायारानी और दयाराम जैसे पात्रों का प्रेम व सम्मान उसके प्रति भावनात्मक संतोष भी प्रदान करता है। उपन्यास में प्रस्तुत समस्याएँ केवल वाखीराय की नहीं, बल्कि त्रिपुरी समाज के उन अनाथ, उपेक्षित और निराश बच्चों की हैं, जिनके जीवन की सच्चाइयों को उपन्यासकार ने गहराई से समझा है। उन्होंने समाज को जागरूक और संवेदनशील बनाने का संदेश उपन्यास में दिया है। उन्होंने पारिवारिक अविश्वास, अकेलेपन, शोषण, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष तथा व्यक्तिगत और सामूहिक चेतना जैसे विषयों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष:

इस pरकर से 'तोङथाई नाईतुगुई' उपन्यास एक साहित्यिक रचना न होकर त्रिपुरा की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परतों को उजागर करने वाला एक प्रामाणिक दस्तावेज़ बन जाता है। श्यामलाल ने इस उपन्यास के माध्यम से न केवल त्रिपुरी समाज की जटिलताओं को सामने रखा है, बल्कि उसमें व्याप्त संघर्ष, असंतोष और पहचान की खोज को भी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। यह उपन्यास पाठकों को सोचने पर विवश करता है कि किस प्रकार सामाजिक असमानता, राजनीतिक शोषण और सांस्कृतिक संकट एक पूरे समुदाय के अस्तित्व को चुनौती दे सकते हैं। उपन्यास का केंद्रीय संदेश यह है कि कठिनाइयों और अव्यवस्थाओं के बीच भी यदि व्यक्ति और समाज अपने आत्म का विश्लेषण करें और संघर्ष का मार्ग अपनाएं तो परिवर्तन संभव है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. देबबर्मा श्यामलाल, तोङथाई नाईतुगुई, त्रिपुरा बानी प्रकाशन, अगरतला, 2007.
2. चौधुरी कुमुद कुंडु, कॉकबरक भाषा उ साहित्य, अक्षर पब्लिकेशन, 1999.
3. देबबर्मा नरेश चंद्र, कॉकबरक भाषा-साहित्येर क्रमविकास, नब चंदना प्रकाशनी, अगरतला, 2010.
4. मुरासिंह लिंकन, देबबर्मा दिप्रा किशोर, रुकुंग, कॉकबरक सुइनाई मोथा, अगरतला, 2024.
5. देबबर्मा श्यामलाल, कॉकबरक साहित्य उ संस्कृति, स्मृति उ मुल्यायण पर्यालोचना, त्रिपुरा बानी प्रकाशन, 2015.
6. देबबर्मा रबिन्द्र किशोर, कॉकबरक कोकमा बुबाक, अक्षर पब्लिकेशन, 2015.
7. देबबर्मा दिप्रा किशोर, थुंगनुक नि हातालो खाकामुंग, पेंस्तर पब्लिकेशन, 2022.
8. देबनाथ रूपक, कॉकबरक लैंग्वेज ओरिजिन एंड डेवलपमेंट, लैंग्वेज विंग, एजुकेशन डिपार्टमेंट TTAADC, 2014.
9. 1. 1954 -2020 novel: Kokboroknihayung.blogspot.com
10. 2. “Kokborok short stories: a brief history” adivasilivesmatter.com
11. 3. brief summary of Kokborok thungnuk: http:// Kokboroknihayung.blogspot.com

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.